

- एक समझौता ज्ञापन (MoU) के माध्यम से लॉन्च किया गया था। इसके हस्ताक्षरकर्त्ताओं में भारत, अमेरिका, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, फ्रांस, जर्मनी, इटली और यूरोपीय संघ शामिल हैं।
- यह पहल वर्ष 2021 में G7 द्वारा शुरू की गई **पार्टनरशिप फॉर ग्लोबल इनफ्रास्ट्रक्चर एंड इनवेस्टमेंट (PGII)** का एक हिस्सा है।
 - IMEC का उद्देश्य राष्ट्रीय संप्रभुता को अक्षुण्ण रखते हुए पारदर्शी, संधारणीय और ऋण-मुक्त बुनियादी ढाँचे को बढ़ावा देकर **इस्वीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)** का एक व्यवहार्य विकल्प बनाना है।
 - कॉरडोर खंड:** IMEC के दो भाग हैं: **पूर्वी कॉरडोर (भारत से खाड़ी)** और **उत्तरी कॉरडोर (खाड़ी से यूरोप)**।
 - उद्देश्य:** भारत, मध्य पूर्व और यूरोप के बीच व्यापार को बढ़ाने के उद्देश्य से बंदरगाहों, रेलवे, सड़कों, समुद्री लाइनों, ऊर्जा पाइपलाइनों और डिजिटल बुनियादी ढाँचे का एक एकीकृत नेटवर्क विकसित करना।
 - भारत के लिये महत्त्व:** IMEC के उपयोग से स्वेज़ नहर समुद्री मार्ग की तुलना में रसद लागत 30% तक कम हो जाएगी और परिवहन समय में 40% तक की कमी आएगी, जिससे भारतीय निर्यात की वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा बढ़ जाएगी।
 - भारत की **वन सन, वन वर्ल्ड, वन ग्रिड (OSOWOG)** पहल **IMEC के ऊर्जा लक्ष्यों के अनुरूप है**, जिससे भारत मध्य पूर्व से सौर और हरित हाइड्रोजन ऊर्जा का दोहन करने में सक्षम होगा, जो नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता से समृद्ध क्षेत्र है।
 - IMEC में व्यापार और ऊर्जा सहयोग बढ़ाने के लिये **ऊर्जा पाइपलाइन, स्वच्छ ऊर्जा अवसंरचना और अधोसमुद्री केबल** शामिल हैं।
 - यह भारत में **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश** आकर्षित करेगा, विशेष रूप से बुनियादी ढाँचे, लॉजिस्टिक्स, हरित ऊर्जा और डिजिटल प्रौद्योगिकियों में, जिससे भारत को **अल्प लागत वाली नवीकरणीय ऊर्जा** का अभिगम प्राप्त करने और **निम्न कार्बन अर्थव्यवस्था में संक्रमण** करने में मदद मिलेगी।
 - IMEC की स्थिति: वर्ष 2023 में इजरायल-हमास संघर्ष** के कारण इस परियोजना में अत्यधिक विलंब हुआ। मध्य पूर्व में भू-राजनीतिक अस्थिरता से अस्थायी रूप से इसकी विकास गति रुक गई है।
 - इसके बावजूद, **कूटनीतिक सहभागिता जारी है** जहाँ भारत और UAE ने वर्ष 2024 में एक अंतर-सरकारी रूपरेखा समझौते (IGFA) पर हस्ताक्षर किये, यह परिचालन सहयोग और IMEC के लिये एक संयुक्त रसद मंच के निर्माण पर केंद्रित है।

IMEC की प्रगतिके समक्ष कौन-सी चुनौतियाँ हैं?

- भू-राजनीतिक अस्थिरता:** इसकी प्रगतिके समक्ष **गाजा संघर्ष** एक गंभीर चिंता का विषय है, जिससे पश्चिम एशिया में कूटनीतिक सामान्यीकरण बाधित हो रहा है, जो IMEC की सफलता का एक प्रमुख आधार है।
 - सऊदी-ईरान प्रतिद्वंद्वता और इराक तथा सीरिया** में अस्थिरता सहित क्षेत्रीय अस्थिरता, IMEC के तहत बुनियादी ढाँचे के विकास और आपूर्ति शृंखला सुरक्षा के लिये गंभीर खतरा है।
- स्पष्ट वित्तीय प्रतिबद्धता का अभाव:** IMEC का लक्ष्य बुनियादी ढाँचे के अभाव को पूरा करने के लिये वर्ष 2027 तक **600 बिलियन अमेरिकी डॉलर** जुटाना है, लेकिन इसमें हितधारकों के बीच स्पष्ट वित्तीय रोडमैप और लागत-साझाकरण योजना का अभाव है।
 - इस स्तर के बुनियादी ढाँचे के विकास के लिये **दीर्घकालिक निवेश (लगभग 3 बिलियन अमेरिकी डॉलर से 8 बिलियन अमेरिकी डॉलर)** की आवश्यकता है, जो वैश्विक आर्थिक मंदी के बीच अनिश्चिति बना हुआ है।
- व्यापार व्यवधान की संभावना:** **स्वेज़ नहर अवरोध (2021)** और **काला सागर नौवहन व्यवधान (रूस-यूक्रेन संघर्ष के कारण)** जैसे उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि समुद्री व्यापार अतिसंवेदनशील है।
 - IMEC क्षेत्र में इसी प्रकार की घटनाओं से **वश्वसनीयता प्रभावित हो सकती है**, जबकि हिंद महासागर में चीन जैसी अतिरिक्त आंचलिक शक्तियों के बढ़ते सैन्यीकरण और नौसेना की उपस्थिति से **समुद्री विवाद** की आशंका बढ़ती है।
- सीमित भौगोलिक समावेशन:** **तुर्की, ईरान, कतर और मिस्र** जैसे प्रमुख क्षेत्रीय देश वर्तमान में IMEC का हिस्सा नहीं हैं, जिससे इसकी भू-राजनीतिक और आर्थिक पहुँच सीमित हो गई है।
 - IMEC की दीर्घकालिक सफलता **सतत राजनीतिक सहयोग** पर निर्भर करती है, जो इसमें शामिल देशों के भिन्न-भिन्न राष्ट्रीय हितों और गठबंधनों के कारण चुनौतीपूर्ण है।
- स्थापित मार्गों से प्रतिस्पर्धा:** **स्वेज़ नहर मार्ग** अच्छी तरह से स्थापित है, और इसकी तुलना में IMEC की लागत प्रभावशीलता पर अभी भी बहस चल रही है।
 - यदि क्षेत्रीय चुनौतियाँ बनी रहीं तो IMEC एक **महंगा विकल्प** हो सकता है, जिसमें कोई गारंटीकृत रटर्न नहीं होगा।
- तकनीकी चुनौतियाँ:** समुद्र के नीचे डेटा केबलों सहित IMEC के डिजिटल बुनियादी ढाँचे को सदस्य देशों के बीच अलग-अलग तकनीकी मानकों के कारण एकीकरण संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।
 - निराध कनेक्टिविटी सुनिश्चित करना जटिल है, और **अमेरिका में कोलोनियल पाइपलाइन घटना** जैसे साइबर हमलों का जोखिम वैश्विक डिजिटल प्रणालियों की भेद्यता को रेखांकित करता है।

भारत IMEC को प्रभावी कार्यान्वयन की ओर कैसे ले जा सकता है?

- IMEC की तैयारी के लिये घरेलू बुनियादी ढाँचे को मजबूत करना:** भारत पश्चिम एशिया में धीमी प्रगतिकी इस अवधि का उपयोग अपने बंदरगाहों (मुंद्रा (गुजरात), कांडला (गुजरात) और जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट (नवी मुंबई)) को **मजबूत करने, IMEC नोड्स के साथ आर्थिक क्षेत्रों को विकसित करने** और वैश्विक मूल्य शृंखलाओं में बेहतर एकीकरण के लिये घरेलू रसद को उन्नत करने और भारत को एक विश्वसनीय वैश्विक आपूर्ति शृंखला विकल्प के रूप में स्थापित करने के लिये कर सकता है।
- व्यापार प्रक्रिया का मानकीकरण:** IMEC के तहत कुशल सीमा पार व्यापार के लिये सभी सदस्य देशों को कागज़ी कार्यवाही को न्यूनतम करने और विलंब को कम करने के लिये **इंडिया-UAE वरचुअल ट्रेड कॉरडोर** जैसे ढाँचे को अपनाने की आवश्यकता है।
- लचीले बुनियादी ढाँचे की ओर:** भारत सतत, जलवायु-लचीले और भू-राजनीतिक रूप से अनुकूलनीय परियोजनाओं के निर्माण के लिये गुणवत्ता बुनियादी ढाँचे के निवेश (QII) के G-20 संधिधार्ताओं को अपनाने के लिये IMEC देशों का नेतृत्व कर सकता है।
 - यह दृष्टिकोण **ग्रीन बॉण्ड और सतत वृत्ति** के माध्यम से **सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP)** और निजी पूंजी को आकर्षित कर

- कषेत्रीय सुरकषा ढाँचे में वृद्धि: भारत IMEC को आतंकवाद, समुदरी डकैती और साइबर खतरों से बचाने के लिये [ह्रद महासागर रमि एसोसिएशन \(IORA\)](#) और [खाडी सहयोग परषिद \(GCC\)](#) के माध्यम से मज़बूत सुरकषा संबंधों पर ज़ोर दे सकता है।
- तकनीकी एकीकरण को बढ़ावा देना: भारत एकीकृत भुगतान इंटरफेस (UPI) आधारित भुगतान प्रणाली, समुद्र के नीचे केबल, 5G अवसंरचना को बढ़ावा देकर, ई-कॉमर्स, फनिटेक और स्मार्ट सटि पहलों का समर्थन करते हुए IMEC के साथ डजिटल वभिाजन को कम करते हुए डजिटल कनेक्टिविटी में अग्रणी हो सकता है।

- **अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC):** इसे वर्ष 2000 में रूस के बाल्टिक सागर तट को ईरान के माध्यम से भारत के पश्चिमी बंदरगाहों से जोड़ने के लिये प्रस्तावित किया गया था।
 - रूस, भारत और ईरान ने 7,200 किलोमीटर लंबी **अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन कॉरिडोर (INSTC)** के विकास के लिये वर्ष 2002 में प्रारंभिक समझौतों पर हस्ताक्षर किये थे।
 - **वर्तमान में इसमें 13 सदस्य हैं:** भारत, ईरान, रूस, अज़रबैजान, आर्मेनिया, कज़ाकस्तान, कर्गिस्तान, ताजिकस्तान, तुर्की, यूक्रेन, बेलारूस, ओमान और सीरिया, तथा बुल्गारिया एक पर्यवेक्षक राज्य है।
- **चाबहार बंदरगाह परियोजना:** भारत, ईरान और अफगानिस्तान ने **चाबहार बंदरगाह** पर शाहदि बेहेश्टी टर्मिनल विकसित करने के लिये एक त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किये, जो भारत की पहली विदेशी बंदरगाह परियोजना है।
 - इस परियोजना का उद्देश्य **पाकिस्तान को दरकिनार कर** भारत को अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक पहुँच प्रदान करना है, जिससे तीनों देशों के बीच पारगमन व्यापार को बढ़ावा मिलाया।
- **भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग:** इस परियोजना का उद्देश्य भारत के मणिपुर राज्य के मोरेह से शुरू होकर म्यांमार से गुज़रते हुए थाईलैंड के माई सोत पर समाप्त होने वाला सड़क संपर्क बनाना है।
- **कलादान मल्टीमॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट:** इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य कोलकाता के पूर्वी बंदरगाह को म्यांमार के सतितवे बंदरगाह से समुद्र के रास्ते जोड़ना है, जिससे दक्षिण पूर्व एशिया के साथ व्यापार और संपर्क में वृद्धि होगी।

भारत के नेतृत्व में IMEC कनेक्टिविटी को बढ़ाकर और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देकर वैश्विक व्यापार को नया आकार देने का वादा करता है **IMEC सचिवालय** की स्थापना परचालन को सुव्यवस्थित करने और परियोजना के सुचारू निष्पादन को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण होगी। इसके कार्यान्वयन से सतत आर्थिक विकास और वैश्विक समृद्धि का एक नया युग शुरू होगा।